एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 06, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2026)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

ग्रामीण विकास में बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग

*कैलाश
श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर, जयपुर, राजस्थान
*संवादी लेखक का ईमेल पता: solankikishu22@gmail.com

बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग ग्रामीण परिवारों द्वारा छोटे स्तर पर मुर्गियों का पालन करने की ऐसी व्यवस्था है, जिसमें स्थानीय संसाधनों, उपलब्ध श्रम और कम लागत का उपयोग करके अंडे तथा मांस का उत्पादन किया जाता है। यह ग्रामीण आजीविका, पोषण, रोजगार और अतिरिक्त आय बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

परिचय

भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश छोटे और सीमांत किसान कृषि के साथ पशुपालन एवं कुक्कुट पालन को सहायक गतिविधि के रूप में अपनाते हैं। बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग में सामान्यतः सीमित संख्या में मुर्गियों को घर के आसपास सुरक्षित स्थान पर पाला जाता है। पक्षियों को स्थानीय अनाज, रसोई से प्राप्त सुरक्षित खाद्य अवशेष तथा उपलब्ध प्राकृतिक आहार के साथ संतुलित पूरक आहार दिया जा सकता है। इस प्रणाली की प्रमुख विशेषता यह है कि इसके लिए बड़े भवन, बहुत अधिक भूमि या भारी निवेश की आवश्यकता नहीं होती। ग्रामीण परिवार अपनी आर्थिक क्षमता के अनुसार धीरे-धीरे पक्षियों की संख्या बढ़ा सकते हैं। अंडे और पक्षियों की बिक्री से मिलने वाली आय परिवार की दैनिक आवश्यकताओं तथा कृषि संबंधी खर्चों में सहायता करती है।

बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग की मुख्य विशेषताएँ

कम प्रारंभिक निवेश में शुरू की जा सकती है।
घर के आसपास उपलब्ध स्थान और स्थानीय संसाधनों का उपयोग होता है।
अंडे और मांस दोनों का उत्पादन किया जा सकता है।
ग्रामीण परिवार के सदस्यों को स्थानीय स्तर पर काम मिलता है।
मुर्गियों की देखभाल के लिए बहुत बड़े श्रमबल की आवश्यकता नहीं होती।
अंडे परिवार के भोजन में उच्च गुणवत्ता वाले प्रोटीन का स्रोत बन सकते हैं।
बिक्री से प्राप्त आय परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने में सहायक होती है।

ग्रामीण विकास में महत्व

बैकयार्ड पोल्ट्री ग्रामीण विकास का एक उपयोगी साधन है क्योंकि यह कृषि आधारित परिवारों को आय के अतिरिक्त स्रोत प्रदान करती है। फसल उत्पादन में मौसम, वर्षा और बाजार मूल्य जैसी अनिश्चितताएँ हो सकती हैं। ऐसे समय में अंडे और पक्षियों की बिक्री से प्राप्त नियमित या समय-समय पर मिलने वाली आय परिवार के लिए सहारा बन सकती है। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में छोटे स्तर पर उत्पादन और स्थानीय व्यापार को बढ़ावा मिलता है। पक्षियों की खरीद, चूजों की आपूर्ति, दाना, टीकाकरण, परिवहन और अंडों की बिक्री जैसी गतिविधियों से स्थानीय आर्थिक गतिविधियाँ भी विकसित होती हैं।

रोजगार और आय सृजन

बैकयार्ड पोल्ट्री में परिवार के सदस्य पक्षियों को दाना-पानी देने, साफ-सफाई, अंडे एकत्र करने और स्वास्थ्य की निगरानी जैसे कार्य कर सकते हैं। इससे परिवार के उपलब्ध श्रम का उपयोग होता है। छोटे स्तर से शुरुआत करके उत्पादन बढ़ने पर स्थानीय बाजार में अंडे या पक्षियों की बिक्री की जा सकती है। महिलाओं और युवाओं की

भागीदारी इस गतिविधि को ग्रामीण आजीविका का उपयोगी साधन बना सकती है। उचित प्रशिक्षण, पशु चिकित्सा सहायता और बाजार से जुड़ाव मिलने पर इसकी आर्थिक उपयोगिता और बढ़ सकती है।

पोषण सुरक्षा में योगदान

अंडे पौष्टिक भोजन हैं और इनमें उच्च गुणवत्ता वाला प्रोटीन तथा कई आवश्यक पोषक तत्व पाए जाते हैं। ग्रामीण परिवार यदि कुछ अंडे घर के उपयोग के लिए रखते हैं और अतिरिक्त अंडे बेचते हैं, तो एक ही गतिविधि से पोषण और आय दोनों में सहायता मिलती है। परिवार में उपलब्ध खाद्य विविधता बढ़ाने के लिए अंडों का नियमित एवं सुरक्षित उपयोग उपयोगी हो सकता है। पक्षियों और अंडों को संभालते समय स्वच्छता तथा उचित पकाने की आदतों का पालन करना आवश्यक है।

ग्रामीण महिलाओं की भूमिका

बैकयार्ड पोल्ट्री में महिलाओं की भागीदारी विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो सकती है क्योंकि कई कार्य घर के आसपास किए जा सकते हैं। मुर्गियों की देखभाल, अंडे एकत्र करना और स्थानीय स्तर पर बिक्री जैसे कार्य परिवार की आजीविका में महिलाओं के योगदान को बढ़ाते हैं। यदि महिलाओं को प्रशिक्षण, चूजे, स्वास्थ्य सेवाएँ, बचत समूह और बाजार तक पहुँच उपलब्ध हो, तो वे इस गतिविधि को अधिक व्यवस्थित रूप से चला सकती हैं। इससे परिवार के निर्णयों में आर्थिक भागीदारी बढ़ाने में भी मदद मिल सकती है।

आवास एवं प्रबंधन

मुर्गियों के लिए साफ, सूखा, हवादार और सुरक्षित आश्रय होना चाहिए। आवास को वर्षा, तेज धूप, ठंड, शिकारी जानवरों और चोरी से बचाने की व्यवस्था होनी चाहिए। फर्श पर सूखी बिछावन सामग्री रखी जा सकती है और गीली या गंदी सामग्री को समय-समय पर हटाना चाहिए। पक्षियों को स्वच्छ पीने का पानी नियमित रूप से उपलब्ध होना चाहिए। भोजन के बर्तन साफ रखने चाहिए और बचे हुए खराब या सड़े खाद्य पदार्थ नहीं देने चाहिए। बीमार पक्षियों को स्वस्थ पक्षियों से अलग रखना और आवश्यकता पड़ने पर पशु चिकित्सा विशेषज्ञ से सलाह लेना उचित है।

स्वास्थ्य एवं रोग नियंत्रण

स्वस्थ पक्षी ही अच्छा उत्पादन देते हैं। इसलिए नियमित स्वास्थ्य निगरानी, साफ-सफाई, उचित पोषण और स्थानीय पशु चिकित्सा विभाग की सलाह के अनुसार टीकाकरण महत्वपूर्ण है। नए पक्षियों को सीधे पुराने झुंड में मिलाने के बजाय उचित सावधानी बरतनी चाहिए। यदि किसी पक्षी में असामान्य कमजोरी, भूख में कमी, सांस लेने में कठिनाई या अन्य बीमारी के लक्षण दिखाई दें, तो उसे अलग करके पशु चिकित्सक या प्रशिक्षित पशु स्वास्थ्यकर्मी से सलाह लेनी चाहिए।

बैकयार्ड पोल्ट्री की प्रमुख समस्याएँ

रोगों और पक्षियों की मृत्यु का जोखिम।
उचित आवास और जैव-सुरक्षा की कमी।
दाने की गुणवत्ता और उपलब्धता में समस्या।
स्थानीय बाजार तथा उचित मूल्य की जानकारी का अभाव।
टीकाकरण और पशु चिकित्सा सेवाओं तक सीमित पहुँच।
शिकारी जानवरों और मौसम से होने वाला नुकसान।
वैज्ञानिक प्रबंधन तथा प्रशिक्षण की कमी।

समस्याओं के समाधान

इन समस्याओं को कम करने के लिए ग्रामीण परिवारों को वैज्ञानिक पालन-पद्धति का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। ग्राम स्तर पर टीकाकरण शिविर, पशु स्वास्थ्य सेवाएँ और तकनीकी मार्गदर्शन उपलब्ध कराना उपयोगी है। स्थानीय नस्लों या परिस्थितियों के अनुकूल पक्षियों का चयन, सुरक्षित आवास, स्वच्छ पानी, संतुलित आहार और नियमित स्वास्थ्य निगरानी उत्पादन को बेहतर बना सकते हैं। सहकारी समितियों, स्वयं सहायता समूहों और किसान समूहों के माध्यम से अंडों तथा पक्षियों की सामूहिक बिक्री की व्यवस्था की जा सकती है। इससे बाजार तक पहुँच और सौदेबाजी की क्षमता बढ़ सकती है।

ग्रामीण विकास पर समग्र प्रभाव

बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग को केवल मुर्गी पालन की गतिविधि के रूप में नहीं, बल्कि ग्रामीण आजीविका के एक छोटे उद्यम के रूप में देखा जा सकता है। यह आय, पोषण, रोजगार और स्थानीय व्यापार को एक साथ प्रभावित करती है। कृषि के साथ इसका एकीकरण परिवार की आय के स्रोतों में विविधता ला सकता है। यदि उत्पादन, स्वास्थ्य, प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता और बाजार व्यवस्था को एक साथ विकसित किया जाए, तो बैकयार्ड पोल्ट्री ग्रामीण परिवारों की आर्थिक आत्मनिर्भरता में प्रभावी योगदान दे सकती है।

निष्कर्ष

बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग ग्रामीण विकास के लिए कम लागत और स्थानीय संसाधनों पर आधारित उपयोगी उद्यम है। इससे अंडे और मांस के रूप में भोजन, अतिरिक्त आय तथा रोजगार के अवसर प्राप्त हो सकते हैं। महिलाओं और परिवार के अन्य सदस्यों की भागीदारी से घरेलू स्तर पर आर्थिक गतिविधि मजबूत हो सकती है। इसकी सफलता के लिए अच्छे आवास, स्वच्छता, उचित पोषण, रोग नियंत्रण, टीकाकरण, प्रशिक्षण और बाजार से जुड़ाव आवश्यक हैं। इन सुविधाओं के साथ बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग ग्रामीण परिवारों की आजीविका और पोषण सुरक्षा को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है